हफ़्तावार रिसाला : 425
Weekly Booklet : 425

Tafseer e Noorul Irfan Se 100 Madani Phool (Qist - 7) (Hindi)

“तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान”

से 100 मदनी फूल (क़िस्त : 7)

सफ़्हात : 17

साबिरीन की शान 02
रिज़्क़ बन्दे की तलाश में है 05
बैअते रिज़्वान वालों की शान 13
कुफ़्फ़ार के लिये जहन्नम का अज़ाब 15

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

"तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" से 100 मदनी फूल (क़िस्त : 7)

दुआए अत्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़हात का रिसाला "तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" से 100 मदनी फूल (क़िस्त : 7) पढ़ या सुन ले उसे अपनी और अपने आख़िरी नबी (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की सच्ची मह़ब्बत नसीब फ़रमा और उसे मां बाप और ख़ानदान समेत बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمِین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ो मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे।

(معجم کبیر، 18/362، حدیث:928)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

"सूरतुज़्ज़ुमर" से ह़ासिल होने वाली 14 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ राह़त में गुज़श्ता तकालीफ़ को याद रख कर रब से ख़ौफ़ करना मोमिनों की सिफ़त है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 552)

﴾2﴿ आबिद (यानी इबादत करने वाले) से आलिमे दीन अफ़्ज़ल है, मलाएका आबिद थे और आदम عَلَیْہِ السَّلَام आलिम, आबिदों को आलिम के सामने झुकाया गया। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 552)

﴾3﴿ जिस जगह तुम्हें रब की इबादत की आज़ादी न हो वहां से ऐसी जगह हिजरत कर जाओ जहां इबादत की आज़ादी हो गरज़ येह कि सब कुछ छोड़ दो **अल्लाह** की इबादत न छोड़ो। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 552 मुल्तक़तन)

साबिरीन की शान

﴾4﴿ हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) फ़रमाते हैं कि हर नेकी का अज्र वज़्न से मिलेगा सब्र के सिवा कि उस का अज्र बग़ैर वज़्न है, सब्र का वज़्न ही न होगा, साबिरीन के लिये मीज़ान नहीं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 839)

﴾5﴿ हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) की शान येह है कि ख़ुद सहाबी, मां बाप भी सहाबी, सारी औलाद सहाबी, पोते सहाबी, चार पुश्त की सहाबियत आप की ख़ुसूसिय्यत है जैसे हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام चार पुश्त के नबी हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 553)

﴾6﴿ तक़्वा और ख़शिय्यत (यानी नाफ़रमानियों की वज्ह से बन्दए मोमिन के दिल का ग़मगीन होना) वोह ख़ौफ़ है जो "इताअत का ज़रीआ" बन जाए। इसी ख़ौफ़ पर ईमान का दारो मदार है वरना मुत्लक़न ख़ौफ़े ख़ुदा तो शैतान को भी है उस ने कहा था कि ﴿ اِنِّیْۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ ﴾ । (پ28، الحشر:16) (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मैं **अल्लाह** से डरता हूं जो सारे जहान का रब।) (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 553)

﴾7﴿ जब हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ईमान लाए तो आप ने हज़रते उस्मान, अब्दुर्रहमान बिन औफ़, तल्हा, ज़ुबैर, सअद बिन अबी वक़्क़ास, सईद बिन ज़ैद (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) को अपने ईमान की ख़बर दी और उन्हें भी दावते ईमान दी, येह हज़रात भी आप की तब्लीग़ से ईमान लाए। سُبْحٰنَ اللّٰہ ! "मुबारक है वोह दरख़्त जिस के फल ऐसे हों।" (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 553)

﴾8﴿ खेती सब्ज़ होने के बाद पक कर पीली पड़ती है, फिर काट कर भूसा दाना अलाहदा अलाहदा कर दिया जाता है ऐसे ही दुन्या की बहारें और इन्सान की जिन्दगी है अव्वलन ख़ुशनुमा फिर सब फ़ना, लिहाज़ा इस की "सब्ज़ी" (यानी दुन्या की रौनक़ों) पर एतिमाद न करो। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 839)

﴾9﴿ सूफ़िया (رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہِم) फ़रमाते हैं कि ज़ियादा खाने, ज़ियादा सोने, ज़ियादा बोलने से दिल की सख़्ती पैदा होती है। कम खाओ, कम बीमार पड़ोगे, कम बोलो, गुनाह कम करोगे, दुरूद शरीफ़ ज़ियादा पढ़ो, बे ईमान हो कर न मरोगे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 554)

﴾10﴿ मोमिन एक **अल्लाह** का मानने वाला बन्दा है मुशरिक हज़ारों का ग़ुलाम, दो घर का मेहमान भूका और चन्द आक़ाओं का ग़ुलाम परेशान होता है कि किस किस को राज़ी करे और अपनी ह़ाजत (यानी ज़रूरत) किस से कहे, एक का ग़ुलाम मज़े में रहता है ऐसे ही मोमिन राह़त में है, काफ़िर दुन्या में भी परेशान है आख़िरत में भी।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 554)

﴾11﴿ ह़ज़रते जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلَام) हर रमज़ान में एक बार ह़ुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को सारा क़ुरआन सुनाया करते थे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 556)

﴾12﴿ इन्सान में दो रूहें हैं : एक मक़ामी या सुल्तानी, दूसरी सैलानी। पहली रूह़ से ज़िन्दगी क़ाइम है दूसरी से होशो ह़वास, पहली रूह़ मौत के वक़्त निकलती है दूसरी नींद में। सोने की ह़ालत में एक रूह़ निकल जाती है जिस से होशो ह़वास क़ाइम हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 556)

﴾13﴿ ह़ुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ज़ाते अक़्दस तमाम आस्मानी ज़मीनी ख़ज़ाइने इलाहिय्या की चाबी है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 559)

﴾14﴿ क़ियामत में अम्बियाए किराम (عَلَیْہِمُ السَّلَام) मुद्दई की ह़ैसिय्यत से और उम्मते मुस्त़फ़ा गवाहों की ह़ैसिय्यत से और ह़ुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) शाही गवाह की शान से कि सारे आलम का फ़ैसला ह़ुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के जुम्बिशे लब (यानी सिफ़ारिश) पर होगा। سُبْحَانَ اللّٰہ ! क्या अजीब नज़ारा होगा। **अल्लाह** ख़ैर से दिखाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 560)

“सूरतुल मोमिन” से ह़ासिल होने वाली 10 ख़ूबसूरत बातें

《1》 शफ़ाअते मलाइका (यानी फ़रिश्तों की शफ़ाअत) बरह़क़ है कि वोह मोमिनों के लिये आज भी दुआए मग़्फ़िरत कर रहे हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 562)

सारे मुसलमानों के लिये दुआ

《2》 मुसलमानों के लिये ग़ाइबाना (यानी उन की ग़ैर मौजूदगी में) दुआ करना और बे ग़रज़ दुआ करना, सुन्नते मलाइका है और रब की रिज़ा का ज़रीआ (है)। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 562)

《3》 मुक़द्दस मक़ामात पर जा कर ह़म्दे इलाही के साथ मुसलमान भाइयों के लिये दुआ मांगना ज़ियादा क़बूल के क़रीब है। ह़ाजी को चाहिये कि काबए मुअज़्ज़मा और सुनहरी जाली पर तमाम मुसलमान भाइयों के लिये दुआ करे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 562)

《4》 फ़रिश्ते हम मुसलमानों को इस लिये दुआएं दे रहे हैं कि सब्ज़ गुम्बद वाला, सुनहरी जाली वाला (नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उन से ख़ुश हो जाए। हम को भी चाहिये कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को ख़ुश करने के लिये उन के आलो अस्ह़ाब, उन के मदीने वालों को दुआएं दिया करें, उन के चर्चे किया करें उन का ज़िक्र ख़ैर से किया करें, उर्से बुज़ुर्गान का येही मक़्सद है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 562)

《5》 बाज़ दिल की पोशीदा चीज़ों पर भी ह़िसाब व अज़ाब होगा, जैसे बुरे अक़ीदे और बुरे इरादे (यानी जिन पर अमल करने का पक्का इरादा कर लिया हो), हां ग़ैर इख़्तियारी बुरे ख़यालात पर पकड़ नहीं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 563)

《6》 वाज़ (यानी नसीह़त करने) का त़रीक़ा येह ही मुफ़ीद है कि वाइज़ (यानी नसीह़त करने वाला) अपने को भी मुजरिमों में दाख़िल कर के गुफ़्तगू करे जैसे कि हम आज बेनमाज़ी हो गए ह़लांकि ख़ुद नमाज़ी है ताकि वाइज़ की ख़ैर ख़्वाही वाज़ेह़ हो जाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 565)

《7》 हासिदों के मक्र (यानी धोके) से **अल्लाह** की पनाह मांगनी चाहिये।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 568)

《8》 रात खेल तमाशों में गुज़ारना गुनाह है बल्कि बिला वज्ह जागते रहना मुनासिब नहीं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 569)

《9》 सूफ़िया (رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِمۡ) फ़रमाते हैं कि हर चीज़ की ज़कात है। हर नेमत का शुक्र जुदागाना है, वक़्त का शुक्र येह है कि हर वक़्त जाइज़ काम में सर्फ़ करे और कुछ वक़्त **अल्लाह** के ज़िक्र और दीनी ख़िदमत में ख़र्च करे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 569)

《10》 (ऐ इन्सान ! रब्बे करीम ने) तुम्हें सीधी क़ामत बख़्शी, जानवरों की तरह न बनाया, तुम्हें खाने के लिये हाथ बख़्शे ताकि तुम्हारा सर रिज़्क़ के आगे न झुके, राज़िक़ के आगे झुके, سُبۡحَانَ اللہ। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 569)

“सूरए حٰمٓ السَّجۡدَۃ” से हासिल होने वाली 9 ख़ूबसूरत बातें

《1》 जब दिन बुरे आते हैं तो इन्सान ऐब को हुनर समझने लगता है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 572)

《2》 नेककार (यानी नेक बन्दा) नेकी कर के भी मुआफ़ी मांगें कि मौला ! तेरे दरबार के लाइक़ नेकी न हो सकी। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 842)

《3》 ज़मीन आस्मान से अफ़्ज़ल है कि नबियों (عَلَیۡہِمُ السَّلَام) की जाए सुकूनत (यानी ठहरने का मक़ाम) है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 573)

रिज़्क़ बन्दे की तलाश में है

《4》 रिज़्क़ की पैदाइश मर्ज़ूक़ (यानी जिसे रिज़्क़ दिया जाता है उस) से पहले हो चुकी है फिर इन्सान रिज़्क़ की ज़ियादा फ़िक्र क्यूं करे ! रूह जिस्म से चार हज़ार साल पहले पैदा हुई और रिज़्क़ रूह से चार हज़ार बरस पहले पैदा हुवा।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 573)

﴾5﴿ तिलावते क़ुरआने करीम के वक़्त शोर मचाना जिस से तिलावत करने वाले को दुशवारी हो मुशरिकीन का दस्तूर (रवाज) है लिहाज़ा नमाज़े बा जमाअत के वक़्त मस्जिदों के पास ढोल बाजे बजाना, वाज़े क़ुरआन पर शोर मचाना ह़राम है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 575)

﴾6﴿ रब को उस की बोली बड़ी प्यारी मालूम होती है जो दावते ख़ैर दे, अगर्चे उस की आवाज़ मोटी और बातें मामूली हों। **अल्लाह** नसीब करे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 843)

﴾7﴿ ग़ुस्से के वक़्त اَعُوْذُ (यानी اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم) पढ़ना बहुत मुफ़ीद है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 577)

﴾8﴿ हमेशा नबी अपनी क़ौम की ज़बान में भेजे गए और किताब नबी की ज़बान में उतारी गई, येह न हुवा कि नबी की ज़बान और किताब की ज़बान और।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 578)

﴾9﴿ राह़त में रब को भूल जाना और सिर्फ़ मुसीबत में दुआ करना कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा है जो रब को नापसन्द है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 843)

“सूरतुश्शूरा” से ह़ासिल होने वाली 7 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ उलमा का तवक्कुल अस्बाब जमा कर के मुसब्बिबे अस्बाब (यानी **अल्लाह** पाक) पर नज़र करना है, सूफ़िया का तवक्कुल अस्बाब से मुंह मोड़ कर मुसब्बिबे अस्बाब पर नज़र करना है, हु़ज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने दोनों तवक्कुल कर के दिखाए हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 581)

﴾2﴿ नूह عَلَیْہِ السَّلَام पहले साह़िबे शरीअत नबी हैं और आप ने ही पहले कुफ़्फ़ार को तब्लीग़ की, आप ही की नाफ़रमान उम्मत पर पहले अज़ाब आया।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 844)

﴾3﴿ "इस्तिक़ामत" सुन्नते अम्बिया है। सूफ़िया फ़रमाते हैं कि एक इस्तिक़ामत हज़ार करामतों से अफ़्ज़ल है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 582)

﴾4﴿ एक ही नेकी पर इकतिफ़ा न करे, जिस क़दर मुम्किन हो, कर गुज़रे। दाना फेंके जाओ, न मालूम कौन सा उग जाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 844)

﴾5﴿ सूफ़िया फ़रमाते हैं कि निस्फ़ ईमान सब्र है और निस्फ़ शुक्र। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 585)

﴾6﴿ कोई शख़्स इस दुन्या में बे हिजाब (यानी बग़ैर पर्दे और आड़ के) रब से कलाम नहीं कर सकता। मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने रब से कलाम किया मगर हिजाब से। हमारे हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने बेहिजाब रब से कलाम किया मगर दूसरी दुन्या में बल्कि अर्श से वरा (यानी आगे) पहुंच कर। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 587)

﴾7﴿ हज़रते जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) जब पहली वह़ी लाए तो हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने यक़ीनी तौर पर जान लिया कि येह जिब्रील हैं और येह जो कुछ कह रहे हैं वोह क़ुरआन है और येह रब के भेजे हुए हैं इसी लिये हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने उन से येह न पूछा कि तुम कौन हो ? और तुम अपनी त़रफ़ से येह बातें कर रहे हो या क़ुरआन सुना रहे हो ? (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 845)

"सूरतुज़्ज़ुख़रुफ़" से ह़ासिल होने वाली 9 ख़ूबसूरत बातें

अरबी ज़बान की शान

﴾1﴿ क़ुरआन के सिवा कोई आस्मानी किताब अरबी में न आई क्यूंकि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के सिवा अरब में इस्माईल عَلَيْهِمُ السَّلَام के बाद कोई नबी न आया। सारी कुतुब इब्रानी ज़बान में भेजीं, अब वोह ज़बान भी मिट गई मगर क़ुरआन की वज्ह से अरबी आम है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 588)

﴾2﴿ अरबी ज़बान तमाम ज़बानों से अशरफ़ (यानी अफ़्ज़ल) है कि उस ज़बान में क़ुरआन आया।[1] हमारे हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ज़बान अरबी थी। ग़रज़ येह कि अरबी ज़बान रूहानी है बाक़ी ज़बानें जिस्मानी। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 588)

नरीना औलाद की दुआ करना अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) की सुन्नत है

﴾3﴿ बाज़ उलमा ने फ़रमाया कि काफ़िर की सिर्फ़ बदियां (यानी बुराइयां) लिखी जाती हैं और दूसरा फ़रिश्ता इस पर गवाह होता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 846)

﴾4﴿ इस्लाम में मर्द औरत सब के लिये चांदी सोने पर तक्या लगाना उस के बिस्तर पर बैठना सब कुछ ह़राम है, औरतों को चांदी सोने के सिर्फ़ ज़ेवर पहनना ह़लाल है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 591)

﴾5﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) वफ़ात के बाद भी ज़िन्दा हैं मगर हमारी निगाह से छुपे हुए हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 591 बित्तग़य्युर क़लील)

﴾6﴿ नुबुव्वत तमाम अक़ाइदे इस्लामिय्या की अस्ल (यानी बुन्याद) है। नबी को मान लिया सब कुछ मान लिया, नबी का इन्कार किया हर अक़ीदे का इन्कार कर दिया। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 592)

﴾7﴿ अपने लिये मह़बूब बन्दों से दुआ करवाना बड़ी पुरानी सुन्नत है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 592)

﴾8﴿ कुफ़्फ़ार ह़त्ताकि फ़िरऔनी भी मानते थे कि नबी ह़ाजत रवा, मुश्किल कुशा, फ़रयाद रस (यानी फ़रयाद सुनने वाले) हैं कि बवक़्ते मुसीबत अपनी मुश्किल कुशाई के लिये नबी के पास आते थे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 592)

---

1 ...मरने के बाद सब की ज़बान अरबी हो जाती है अरबी में ही ह़िसाबे क़ब्र व ह़िसाबे क़ियामत होगा। अहले जन्नत की ज़बान अरबी होगी। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 588)

“सूरतुद्दुख़ान” से हासिल होने वाली 3 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ रब की क़समें यक़ीन दिलाने के लिये नहीं होतीं, बल्कि जिन की क़सम फ़रमाई जाए इन की मह़बूबिय्यत या अहमिय्यत दिखाने के लिये होती है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 595)

﴾2﴿ अ़ज़ाब देख कर ईमान लाना इस लिये क़बूल नहीं होता कि इस में पैग़म्बर की ज़बान पर एतिमाद नहीं होता बल्कि अपनी आंख या अ़क़्ल पर एतिमाद है और ईमान पैग़म्बर पर एतिमाद का नाम है, येही ईमान बिलग़ैब है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 596)

﴾3﴿ दुन्या में रब तआला की रह़मानियत (यानी सिफ़ते रह़मान) का ज़ुहूर है, इस लिये दुश्मन दोस्त सब को रोज़ी दे रहा है, आख़िरत में उस की रह़ीमियत (यानी सिफ़ते रह़ीम) की जल्वागरी होगी कि सिर्फ़ मोमिनों पर रह़म फ़रमाएगा, दुश्मनों पर अ़ज़ाब करेगा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 598)

“सूरतुल जासिया” से हासिल होने वाली 2 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ साइन्स, फ़ल्सफ़ा, इल्मे रियाज़ी ह़ासिल करना इबादत है मगर इस को इस्लाम का ख़ादिम बनाया जाए और इस से दलाइले क़ुदरत मालूम किये जाएं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 599)

﴾2﴿ सूफ़िया (رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِم) फ़रमाते हैं कि मोमिन का इश्क़ो मह़ब्बत नहीं लिखा जाता कि अमल नहीं बल्कि दिली कैफ़िय्यत है, तमाम आमाल का बदला जन्नत होगा, इश्क़ का बदला मह़बूबे ह़क़ीक़ी का विसाल (यानी **अल्लाह** पाक का क़ुर्ब) है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 602)

“सूरतुल माइदा” से हासिल होने वाले 5 मदनी फूल

﴾1﴿ क़ुरबानी बड़ी पुरानी इबादत है कि आदम عَلَیْہِ السَّلَام के बेटों ने दी।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 135)

﴾2﴿ पिछली उम्मतों में क़ुरबानी का गोश्त खाना जाइज़ न था, उन की मक़्बूल क़ुरबानी को क़ुदरती आग जला जाती थी और मर्दूद (यानी नामक़्बूल) क़ुरबानी वैसे ही पड़ी रहती थी। क़ुरबानी का गोश्त खाना हमारी उम्मत की ख़ुसूसिय्यत है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 135)

﴾3﴿ इन्सान ने सब से पहला जुर्म क़त्ल का किया। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 135)

﴾4﴿ ह़सद बड़ी बुरी चीज़ है, ह़सद ही ने शैत़ान को बरबाद किया।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 135)

﴾5﴿ दुन्या में सब से पहला फ़साद औरत की वज्ह से हुवा। शेर :

झगड़े की बुन्यादें तीन ! ज़न है ज़र है और ज़मीन

(यानी दुन्या में अक्सर झगड़े औरत, ज़मीन या मालो दौलत की वज्ह से होते हैं)

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 135 माख़ूज़न)

"सूरतुल अह़क़ाफ़" से ह़ासिल होने वाली 7 ख़ूबसूरत बातें

सच्ची तौह़ीद

﴾1﴿ **अल्लाह** को रब मानने की ह़क़ीक़त येह है कि उस के सारे रसूलों, किताबों वग़ैरा को माने। अगर किसी को अपना वालिद तस्लीम किया गया तो उस के सारे अज़ीज़ों को अपना बुज़ुर्ग या अज़ीज़ मान लिया कि वालिद का बाप अपना दादा है, उस का भाई अपना चाचा, उस की बीवी अपनी मां। तो जो कोई रब को मानने का दावा करे मगर उस के रसूल का इन्कार करे वोह दावे में झूटा है वोह रब को मानता ही नहीं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 849)

﴾2﴿ दुन्या ही में हु़ज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه) को जन्नत में अपने साथ रखने का वादा फ़रमा लिया बल्कि उन्हें हमेशा के लिये क़ब्र में अपने साथ सुला लिया। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 849)

﴾3﴿ मां बाप पर फ़र्ज़ है कि औलाद को राहे रास्त पर लगाएं वरना इन की भी पकड़ होगी। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 605)

﴾4﴿ सूफ़िया फ़रमाते हैं कि "मोमिन" वक़्त, माल, औलाद हर चीज़ में ज़कात निकालता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 606)

﴾5﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से पहले जिन्नात आस्मान पर जाते थे, वहां फ़रिश्तों का कलाम सुनते थे, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के ज़माने में उन का वहां जाना बन्द किया गया, उन पर शिहाब मारे जाने लगे, तब उन्हें फ़िक्र हुई कि दुन्या में कौन आया जिस की वज्ह से हमारी बादशाहत गई, इस तलाश में उन की मुख़्तलिफ़ जमाअतें निकलीं, अलाक़ा नसीबैन की जमाअत जिन में सात या नौ जिन्न थे मुल्के अरब की तरफ़ आए, येह लोग सूक़े उकाज़ (उकाज़ के बाज़ार) पर पहुंचे जो मक्कए मुअज़्ज़मा और ताइफ़ के दरमियान है, येह वक़्त फ़ज्र का था, हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उकाज़ के पास बाग़ में जिसे "बत़्ने नख़्ला" कहा जाता था सहाबा को नमाज़े फ़ज्र पढ़ा रहे थे, उन जिन्नात के कानों में जब हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की क़ुरआन शरीफ़ की आवाज़ पहुंची तो येह सब ठहर कर ख़ामोशी से सुनने लगे मगर येह नमाज़े फ़ज्र वोह थी जो सरकार (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) बतौरे इल्हाम पढ़ा करते थे क्यूंकि जिन्नात का येह वाक़िआ मेराज से पहले का है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 607)

﴾6﴿ जिन्नात के लिये जन्नत नहीं, उन की नेकियों की जज़ा अज़ाब से नजात है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 850)

﴾7﴿ जिस्मानी राहतें रूहानी अज़ाब के मुक़ाबिल एक साअत या उस से भी कम हैं तो आक़िल (यानी समझदार) को चाहिये कि जिस्मानी राहत आख़िरत के मुक़ाबिल इख़्तियार न करे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 608)

"सूरए मुहम्मद" से हासिल होने वाली 8 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ ईमान के लिये तमाम उन चीज़ों का मानना ज़रूरी है जो हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

रब की त़रफ़ से लाए, अगर एक का भी इन्कार किया काफ़िर हुवा ख़्वाह ब ज़रीअए क़ुरआन हम तक पहुंची हो या ब ज़रीअए ह़दीस शरीफ़। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 608)

﴾2﴿ शहीद क़त्ल होते ही रब के सामने ह़ाज़िर होता है कि कुछ तमन्ना कर, इसी लिये उसे शहीद कहते हैं यानी रब के ह़ुज़ूर ह़ाज़िर। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 609)

जन्नतियों के घरों में नहर की वज्ह

﴾3﴿ चन्द वज्ह से जन्नत में नहर है, बह़र या दरिया नहीं, एक येह कि नहर क़ब्ज़े (यानी कन्ट्रोल) में होती है, बह़र (यानी समुन्दर) क़ब्ज़े में नहीं होता, दूसरा येह कि नहर में ह़ुस्न होता है बह़र टेढ़ी, ह़ुस्न से ख़ाली। तीसरा येह कि नहर सिर्फ़ मुफ़ीद होती है मगर बह़र सैलाब से नुक़्सान भी पहुंचा देती है, चौथा येह कि नहर घरों में लाई जा सकती है, बह़र नहीं आता और जन्नत में चार नहरें होंगी, दूध की, शराबे त़हूर की, शहदे ख़ालिस की और पानी की जिन का ह़ुस्न हमारे ख़याल से बाहर है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 850 ब तग़य्युरे क़लील)

﴾4﴿ जो शख़्स ह़लाल ह़राम में फ़र्क़ न करे, जो सामने आ जाए खा ले जानवर की त़रह़ बल्कि जानवर से भी बदतर है कि वोह बेअक़्ल हैं येह अक़्ल वाला है फिर भी वोह सूंघ कर मुंह में डालते हैं और येह वैसे ही, जो सिर्फ़ जिस्मानी राह़त के लिये खाए वोह जानवर ही है, मोमिन रब की इबादत के लिये खाता है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 610)

﴾5﴿ ह़ुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की तशरीफ़ आवरी क़ियामत की अलामते कुब्रा है, आख़िरी नबी आ चुके अब क़ियामत ही है, नीज़ चांद फट जाना और ह़ुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के दीगर मोजिज़ात अलामाते क़ियामत हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 850)

﴾6﴿ नेक अमल शुरूअ करने के बाद न तोड़े, नफ़्ल नमाज़ जब शुरूअ कर दी जाए तो उस का तोड़ना ह़राम है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 851)

《7》 दुन्या की ज़िन्दगी वोह जो ग़फ़्लत में गुज़रे येह ज़िन्दगी बहुत जल्द गुज़रने वाली है इस में मश्ग़ूलिय्यत नुक़्सान देह है, जो ज़िन्दगी **अल्लाह** की याद और उस की इत़ाअत में गुज़रे, वोह दीनी ज़िन्दगी है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 851)

《8》 दीन हमारा मोह़ताज नहीं, हम दीन के मोह़ताज हैं, दीन हम से पहले भी था और हमारे बाद भी रहेगा, अगर रब हमें ख़िदमते दीन की तौफ़ीक़ दे दे तो उस की बन्दा नवाज़ी है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 613)

"सूरतुल फ़त्ह़" से ह़ासिल होने वाली 4 ख़ूबसूरत बातें

बैअत करने वालों की शान

《1》 तमाम सह़ाबा (عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان) ख़ुसूसन बैअते रिज़वान वाले बड़ी ही शान वाले हैं, उन की तादाद चौदह सौ है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 614)

《2》 बुज़ुर्गों के हाथ पर बैअत "सुन्नते सह़ाबा" है, ख़्वाह बैअते इस्लाम हो या बैअते तक़्वा या बैअते तौबा या बैअते आमाल वग़ैरा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 851)

《3》 बैअत के वक़्त मुसाफ़ह़ा भी सुन्नत है मगर मर्दों के लिये, औरत को कलाम से बैअत किया जाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 852)

《4》 हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही से हिदायत मिल सकती है और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से हर क़िस्म की हिदायत ही मिलती है, ख़याल रहे कि क़ुरआन से हिदायत भी मिलती है, गुमराही भी, (जैसा कि क़ुरआने करीम में **अल्लाह** पाक का फ़रमान है : ﴿ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيۡرًا ۙ وَّ يَهۡدِىۡ بِهٖ كَثِيۡرًا ؕ ﴾ (پ1، البقرۃ:26) तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : "**अल्लाह** बहुत से लोगों को उस के ज़रीए गुमराह करता है और बहुत से लोगों को हिदायत अत़ा फ़रमाता है।" नुज़ूले क़ुरआन का अस्ल मक़्सद तो हिदायत है लेकिन चूंकि बहुत से लोग अपनी कम फ़हमी की वज्ह से क़ुरआन को सुन कर गुमराह भी होते हैं लिहाज़ा इस एतिबार से फ़रमाया कि क़ुरआन के ज़रीए बहुत से लोग गुमराह

होते हैं। (तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, 1/92, पा : 1 अल बक़रह, तहतल आयह : 26) मगर हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से सिर्फ़ हिदायत मिलती है, दवाए शिफ़ा मिलती है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 853)

"सूरतुल हुजुरात" से हासिल होने वाली 7 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ तमाम इबादात बदन का तक़्वा हैं और हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का अदब दिल का तक़्वा है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 619)

﴾2﴿ हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रते उमर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا) की बख़्शिश ऐसी ही यक़ीनी है जैसे **अल्लाह** का एक होना। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 619)

﴾3﴿ गुनाह न करना, बड़ा कमाल नहीं, बल्कि गुनाह से दिल में नफ़रत पैदा हो जाना बड़ा कमाल है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 853)

﴾4﴿ मुसलमानों में सुल्ह कराना हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की सुन्नत और आला दर्जे की इबादत है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 854)

﴾5﴿ मुसलमान भाई को नसबी ताना देना हराम और मुशरिकों का तरीक़ा है, आज कल येह बीमारी मुसलमानों में आम फैली हुई है। नसबी ताने की बीमारी औरतों में ज़ियादा है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 620)

﴾6﴿ सूफ़िया फ़रमाते हैं कि फ़रिश्तों ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के मुतअल्लिक़ कुछ शिकायत की थी जिस की तौबा इस तरह कि बहुक्मे परवरदगार उन्हें सज्दा किया। लिहाज़ा अगर किसी मुसलमान को ऐब लगाया हो या ग़ीबत की हो तो उस की आजिज़ी से मुआफ़ी मांगे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 854)

﴾7﴿ बाज़ गुमान फ़र्ज़ हैं, जैसे **अल्लाह** पाक के साथ अच्छा गुमान रखना कि वोह अपने फ़ज़्ल से मुझ गुनाहगार को बख़्श देगा। बाज़ गुमान हराम हैं जैसे रब पर बदगुमानी कि वोह मुझे हरगिज़ न बख़्शेगा या नेक मुसलमान पर बिलावज्ह बदगुमानी। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 854 मुल्तक़तन)

"सूरए قٓ" से ह़ासिल होने वाली 10 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ रब हम से शहे रग से ज़ियादा क़रीब है और ह़ुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) जान से ज़ियादा क़रीब । سُبْحَانَ الله । (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 623) । ﴾اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ﴿ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : "येह नबी मुसलमानों के उन की जानों से ज़ियादा मालिक हैं।" इस आयत से मालूम हुवा कि दीनो दुन्या के तमाम उमूर में नफ़्स की इत़ाअत पर सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअत मुक़द्दम है कि अगर किसी मुसलमान को ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी चीज़ का हुक्म दें और उस की ख़्वाहिश कोई और काम करने की हो तो उस पर लाज़िम है कि अपनी ख़्वाहिश को पूरा न करे बल्कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस चीज़ का हुक्म दिया है उसे ही करे। याद रहे कि ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअत **अल्लाह** तआला की इत़ाअत है और नफ़्स के मुक़ाबले में सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअत नजात का ज़रीआ है क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस चीज़ की त़रफ़ बुलाते हैं जिस में लोगों की नजात है और नफ़्स उस चीज़ की त़रफ़ बुलाता है जिस में लोगों की हलाकत है। लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिये कि वोह दीनी और दुन्यवी तमाम उमूर में अपने नफ़्स की इत़ाअत करने की बजाए ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअत व फ़रमां बरदारी करे ताकि हलाकत से बच कर नजात पा जाए।

(तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान, 7/566, पा : 21, अल अह़ज़ाब, तह़तल आयह : 6 मुल्तक़त़न)

﴾2﴿ बन्दए मोमिन के मरने के बाद दोनों फ़रिश्ते (यानी किरामन कातिबीन) ता क़ियामत उस की क़ब्र पर तस्बीह़ व तहलील करते रहते हैं जिस का सवाब उस बन्दे को मिलता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 623)

कुफ़्फ़ार के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब

﴾3﴿ जो फ़रिश्ते कुफ़्फ़ार के नामए आमाल लिखने के लिये मुक़र्रर हैं वोही उन्हें दोज़ख़ में डालेंगे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 855)

﴾4﴿ कुफ़्फ़ार को दोज़ख़ में पहुंचाया न जाएगा बल्कि ऊपर से फेंका जाएगा, **अल्लाह** की पनाह ! गुनाहगार मोमिन अगर दोज़ख़ में गया फिर भी उसे फेंका न जाएगा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 855)

﴾5﴿ नफ़्से अम्मारा को मशवरा देने वाला क़रीन शैतान है और दिल को मशवरा देने वाला फ़रिश्ता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 624)

﴾6﴿ रुजूअ लाने वाला वोह है जो गुनाह पर क़ाइम न रहे तौबा करे, ह़फ़ीज़ वोह जो अपने हर काम में शरई हुदूद की हिफ़ाज़त करे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 624)

﴾7﴿ सूफ़िया फ़रमाते हैं कि "क़ल्बे मुनीब (यानी तौबा करने वाला दिल)" **अल्लाह** की बड़ी नेमत है जो ख़ुश नसीब को मिलती है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 624)

﴾8﴿ नमाज़ के बाद तस्बीह़ व तहलील करना बहुत बेहतर है, हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) नमाज़े जमाअत के बाद इस क़दर बुलन्द आवाज़ से ज़िक्रुल्लाह करते थे कि तमाम मह़ल्ला गूंज जाता था। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 625)

﴾9﴿ ह़ज़रते इसराफ़ील (عَلَيْهِ السَّلَام) बैतुल मुक़द्दस के सख़रह पर खड़े हो कर मुर्दों को पुकारेंगे और सब लोग ज़िन्दा हो कर उन के पास ह़ाज़िर हो जाएंगे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 625)

﴾10﴿ मुर्दों को पुकारना शिर्क नहीं, ह़ज़रते इसराफ़ील मुर्दों को पुकारेंगे, ह़ज़रते उज़ैर (عَلَيْهِ السَّلَام) ने मरे हुए गधे और ह़ज़रते इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) ने मरे हुए चार परिन्दों को पुकारा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 625)

"सूरतुज़्ज़ारियात" से ह़ासिल होने वाली 6 ख़ूबसूरत बातें

﴾1﴿ ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام हवाएं तक़्सीम करते हैं, मीकाईल बारिशें, इज़राईल मौत, इसराफ़ील अह़काम (عَلَيْهِمُ السَّلَام)।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 855)

﴾2﴿ तमाम रात सोना भी अच्छा नहीं और तमाम रात जागना भी बेहतर नहीं, अव्वले रात सो जाओ, आख़िरे रात तहज्जुद के लिये जागो फिर कुछ और सोओ, येही सुन्नत है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 626)

﴾3﴿ माल वालों के माल में फ़क़ीरों का ह़क़ होता है और कमाल वालों के कमाल में बेहुनरों का ह़िस्सा होता है, اِنْ شَآءَاللّٰہ हु़ज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की इबादात में हम जैसे गुनाहगारों का ह़िस्सा है, उन के एक एक सज्दे की बरकत से हम जैसे करोड़ों का बेड़ा पार होगा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 626)

हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की

﴾4﴿ सालिह़ीन (यानी नेक बन्दों) की मौजूदगी में फ़ासिक़ों पर अ़ज़ाब नहीं आता, जब अ़ज़ाब आना होता है तो सालिह़ीन को निकाल दिया जाता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 627)

﴾5﴿ जिन्नो इन्स की पैदाइश का अस्ल मक़्सद रोज़ी कमाना नहीं बल्कि इ़बादत है, रोज़ी इ़बादत के ताबेअ़ है जैसे बादशाह नौकरों को अपनी ख़िदमत के लिये रखता है, तन्ख़्वाह ख़िदमत के तु़फ़ैल मिलती है अगर वोह ख़िदमत छोड़ दें तो तनख़्वाह के मुस्तह़िक़ नहीं, रब की रह़मत है कि निकम्मों को भी रिज़्क़ देता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 856)

मक़्स्दे ह़यात

﴾6﴿ (रब्बे करीम) रोज़िये अ़ाम्मा तो अ़ाम मख़्लूक़ को देता है जैसे सूरज की रौशनी, हवा, ज़मीन का फ़र्श, आस्मान का साया और रोज़िये ख़ास्सा मख़्सूस बन्दों को देता है जैसे ईमान, इ़रफ़ान, विलायत, हिदायत, नुबुव्वत वग़ैरा, अगर रोज़ी बन्दे के कस्ब (यानी कमाने) पर मौक़ूफ़ होती तो मां के पेट में बच्चे को न मिलती। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 856)

अगले हफ़्ते का रिसाला

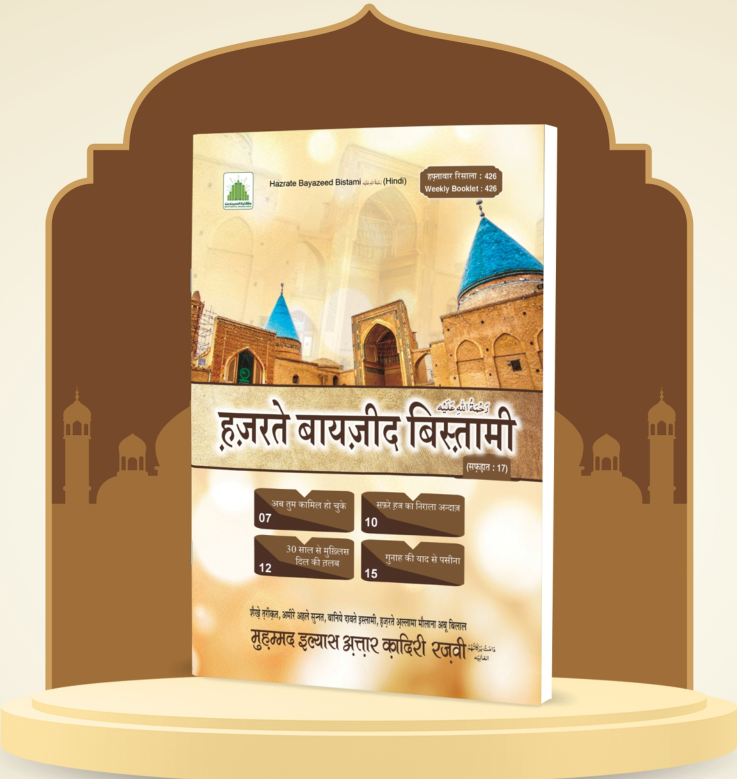

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025